अपभ्रंश साहित्य और उसकी कृतियाँ

– प्रो. डॉ. संजीव प्रचंडिया

■

भारतीय आर्य भाषा के विकास की जो अवस्था अपभ्रंश नाम से जानी जाती है उसके लिए प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में अपभ्रष्ट और अपभ्रंश तथा प्राकृत में अवब्भंश, अवहंस, अवहत्थ, अवहट्ठ, अवहठ आदि नाम मिलते हैं।[1]

आज से लगभग 94 साल पहिले सन् 1902 ई. में जर्मन विद्वान पिशेल ने अपना पहिला संग्रह 'माटे रियालिएन त्सुरकेंट निस डेस अपभ्रंश' तैयार किया जिसमें उन्होंने हेमचन्द्र – प्राकृत-व्याकरण के सभी अपभ्रंश छंदों के अतिरिक्त पैंतीस पद्य और जोड़े। इसी प्रकार सन् 1918 ई. में जर्मन के ही याकोवी ने कवि धनपाल रचित 'भविसयत्त–कहा' का सम्पादन किया। वास्तव में ये लोग 'अपभ्रंश साहित्य' को शोध-खोज की दृष्टि से उभारकर लाने में सहायक हुए हैं। इस दृष्टि से श्री जिनविजय मुनि का कार्य विशेष महत्त्व का है। उन्होंने पुष्पदंत का महापुराण, स्वयंभूकृत पउमचरिउ, हरिवंशपुराण आदि का सफल सम्पादन किया था। इसी प्रकार प्रो. हीरालाल जैन कारंजा जैन भंडार को झाड़-बुहार कर जसहरचरिउ, णायकुमारचरिउ, करकंडचरिउ, पाहुडदोहा आदि ग्रंथों को प्रकाश में लाये।

सामान्य रूप से अपभ्रंश साहित्य की ज्ञात पुस्तकों की संक्षिप्त किन्तु अकारादि क्रम में सूची दी जा सकती है जिससे अपभ्रंश साहित्य का साहित्यिक कृतियों की दृष्टि से परिचय प्राप्त हो सके। यथा –

अ

अमरसेन-चरित – माणिक्कराज

नेमिनाथ चरित	–	दामोदर
	–	लक्ष्मण देव
नेमिनाथ फाग	–	राजशेखर सूरि (सं. 1371 वि.)
नेमिनाथ रास	–	जिनप्रभ सूरि

प

पद्मचरित्र/पउमचरिउ	–	स्वयंभू और त्रिभुवन
पद्मपुराण	–	रइधू
पद्मश्री चरित्र	–	धाहिल (संवत् 1191 वि.)
परमात्मप्रकाश	–	योगीन्द्र
पांडवपुराण	–	यश:कीर्ति
पार्श्वनाथ चरित्र	–	विनयचन्द्र सूरि
पार्श्वनाथ जन्माभिषेक	–	जिनप्रभ सूरि
पार्श्वनाथ पुराण	–	रइधू
पुराण सार	–	पद्मकीर्ति श्री चन्द्र मुनि
प्रद्युम्न चरित	–	रइधू
प्रबन्ध चिन्तामणि (अंशत: अपभ्रंश)	–	मेरुतुंग (संवत् 1361 वि.)

ब

बलभद्र चरित	–	रइधू
बारहखड़ी दोहा	–	महाचन्द
बाहुबलि रास	–	शालिभद्र सूरि

भ

भविस्सयत्त कहा	–	धनवाल
भव्य कुटुम्ब	–	जिनप्रभ सूरि
भव्य-चरित्र	–	जिनप्रभ सूरि
भावना कुलक	–	जिनप्रभ सूरि
भावना संधि	–	जयदेव (संवत् 1606 वि.)

म

मदनरेखा चरित	–	संवत् (1297 वि.)
मलय सूरि-स्तुति	–	
मल्लिनाथ चरित	–	जिनप्रभ सूरि
महावीर चरित	–	जिनेश्वर सूरि के शिष्य
महावीर स्तोत्र	–	
मुनि चन्द्रसूर-स्तुति	–	देव सूरि
मुनिसुव्रत स्वामि स्तोत्र	–	जिनप्रभ सूरि

मेघेश्वर चरित	–	रइधू
मोहराज विजय	–	जिनप्रभ सूरि

य

यशोधर चरित्र (जसहर चरिउ)	–	पुष्पदंत
युगादि जिनचरित्र कुलक	–	जिनप्रभ सूरि
योगसार	–	योगीन्दु
	–	श्रुति कीर्ति

व

वृद्धनवकार	–	जिनवल्लभ सूरि
वज्रस्वामी चरित्र	–	जिनप्रभ सूरि (संवत् 1316 वि.)
वर्द्धमान काव्य (श्रेणिक चरित्र)	–	जयमित्र
वर्द्धमान चरित्र	–	रइधू
वरांग चरित्र	–	तेजपाल
विवेक कुलक	–	जिनप्रभ सूरि
वीर जिन पारणक	–	वर्धमान सूरि

श/ष/स

संयम मंजरी	–	महेश्वर सूरि
संभवनाथ चरित	–	तेजपाल
षट्कर्मापदेश	–	अमरकीर्ति (संवत् 1274 वि.)
श्रीपाल चरित	–	नरसेन
श्रीपाल चरित	–	रइधू
श्रावकाचार	–	देवसेन
शील संधि	–	ईश्वर गणि
शालिभद्रकक्का	–	पद्म
शांतिनाथ चरित्र	–	शुभकीर्ति
संदेश रासक	–	अब्दुल रहमान
सन्मति जिन चरित्र	–	रइधू
सुकुमाल स्वामि चरित	–	पुष्पभद्र (पूर्णभद्र)
सुदर्शन चरित्र	–	नयनन्दिनी/नयनन्दिन (संवत् 1100 वि.)
सुभद्रा चरित्र	–	अभयगणि (संवत् 1161 वि.)
स्थूलभद्र फाग	–	जिनपद्म सूरि (1257 वि.)
सिद्ध हेम शब्दानुशासन (संकलित अपभ्रंश छंद)	–	हेमचन्द

अनाथ संधि – जिनप्रभ सूरि
अनन्त व्रत कथानक –
अन्जनासुन्दरी कथा –
अन्तरंग रास – जिनप्रभ सूरि
अन्तरंग विवाह – जिनप्रभ सूरि
अन्तरंग संधि – रत्नप्रभ सूरि (संवत् 1362 वि.)

आ

आराधना-सार – वीर
आदिपुराण – सिंहसेन (रइधू)
(मेघेश्वर चरित)
आदिनाथ फाग – पुष्पदंत
आत्म-संबोधन – जिनप्रभ सूरि

उ

उपदेशक कुलक – देवसूरि

ऋ

ऋषभजिन-स्तुति –

क

करकंडचरिउ – रइधू
करकंडचरिउ – कनकामर मुनि
कथाकोष (कथाकोश) – श्री चन्द्र (संवत् 941-946)
कलास्वरूप कुलक – जिनदत्त सूरि
कालिकाचार्य कथा – ब्राउन द्वारा सम्पादित
(अत्थि इहेव जम्बू)
(अंशत: अपभ्रंश)
कुवलयमाला-कहा – उद्योतन सूरि (सं. 835 वि.)
(अंशत: अपभ्रंश)
कुमारपाल-प्रतिबोध – सोमप्रभ सूरि (संवत् 1241 वि.)
(अंशत: अपभ्रंश)

च

चन्द्रप्रभचरिउ – यश:कीर्ति
चन्द्रप्रभचरिउ – दामोदर
चैत्यपरिपाटी – जिनप्रभ सूरि
चर्चरी – जिनदत्त सूरि
चर्चरी – सोलण
चर्चरी – जिनप्रभ सूरि

ज

जयति हुअण	–	अभयदेव सूरि (संवत् 1119 वि.)
जयकुमार-चरित्र	–	रइधू
	–	ब्रह्मदेव सेन
जम्बूस्वामी-चरित्र	–	सागरदत्त (संवत् 1060 वि.)
जम्बूचरित्र	–	वीर (संवत् 1299 वि.)
जम्बूस्वामी रासा	–	धर्मसूरि (संवत् 1266 वि.)
जिन रात्रि-कथा	–	नरसेन
जिन-महिमा	–	जिनप्रभ सूरि
जिनदत्त-चरित्र	–	रइधू
जिन जन्म-मह	–	जिनप्रभ सूरि
जीवानुशास्ति संधि	–	नरसेन

त

त्रिषष्ठि – महापुरुष गुणालंकार (महापुराण)	–	पुष्पदंत

द

दङ्गड	–	
दशलक्षण जयमाला	–	सिंहसेन (रइधू)
दानादी (दानादि) कुलक	–	प्रद्युम्न
दोहाकोश	–	काण्ह
दोहाकोश	–	सरह
दोहानुप्रेक्षा	–	लक्ष्मीचन्द्र
दोहापाहुण/दोहापाहुड	–	रामसिंह
दोहा मातृका		

ध

धर्मसूरि स्तुति	–	
धर्माधर्म कुलक	–	जिनप्रभ सूरि
धर्माधर्म विचार	–	जिनप्रभ सूरि

न

नवकार फल कुलक	–	
नागकुमार चरिउ	–	पुष्पदंत
नागकुमार चरित	–	माणिक्क राज
निर्दोष सप्तमी कथा	–	
नेमिनाथ जन्माभिषेक	–	जिनप्रभ सूरि
नेमिनाथ चउपई	–	विनयचन्द्र सूरि (संवत् 1257 वि.)
नेमिनाथ चरिउ	–	हरिभद्र सूरि (8वीं से 12वीं शताब्दि के लगभग)

ह

हरिवंश पुराण	–	रइधू
	–	स्वयंभू और त्रिभुवन
	–	श्रुतिकीर्ति

यद्यपि उपर्युक्त सूची अपभ्रंश साहित्य को सम्पूर्ण नहीं दर्शाती तथापि इनसे इस साहित्य की सामान्य स्थिति का आभास लगाया जा सकता है। संधि, कुलक, चउपई, आराधना, रास, चाँसर, फाग, स्तुति, स्तोत्र, कथा, चरित, पुराण आदि विविध विधाओं में मानव जीवन और जगत् की अनेक भावनाओं और विचारों को सफलतापूर्वक इस साहित्य ने उकेरा है। इस दृष्टि से कुछेक उदाहरण यहाँ दिये जा सकते हैं –

1. **सामाण भास छुडु मा विहउड ।**
   छुडु आगम - जुति किं पिधडउ ॥
   छुडु होंति सुहासिय - वयणाइ ।
   गामेल्ल - भास परिहरणाइं ॥

2. **तपणु वियक्किर तिमिर – धम्मिलु परिल्ह सिर ।**
   तारय-वसण कलमलंत तरू सिहर पक्खिय ॥
   परिसंदिर कुसुम-मधु-विंदु मिसिणए पइं वडुक्खिय ॥

3. **श्रावणि सरवणि कंडुय मेहु**
   गज्जइ, विरि हिनि झिज्जइ देहु ।
   विज्जु झबक्कइ रक्खसि जेवं
   नेमिहि विणु सहि सहियइ के वं ।
   भ्राद्रवि भरिया सरपिक्खेवि
   सकरुण रोअइ राजल देवि ॥

4. **कवि वेस चिंतइ गए - सुण्णा ।**
   ये थण एयहो णहहिं ण मिण्णा ।
   कावि वेस चिंतइ किं वड्ढिय ।
   णीलालय एएण न किड्डिय ॥

5. **मणु मिलियउ परमेसरहो, परमेसर जि मणस्स ।**
   विण्णि वि समरसि हुइ रहिय, पुंज चडावउँ कस्स ॥
   जो परमप्पा सो जि हउँ, जो हउँ सो परमप्प ॥

---

1. अपभ्रंष्टं तृतीयं च तदनन्तंनराधिप, खण्ड 3, अध्याय 3; दे. किं. चि अवब्भंस– क आ दा ..... अल्फेड मास्टर – BSOASXIII.2 में उद्धृत।

मंगलकलश, 394, सर्वोदय नगर
आगरा रोड, अलीगढ़ – 202001